



पत्र-पुष्प



“स्व-उन्नति निमित्त दादियों की शुभ प्रेरणायें, याद पत्र” (20-04-20)

प्राणेश्वर अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा स्व-स्थिति द्वारा सर्व परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने वाले, सभी निश्चयबुद्धि निश्चित स्थिति में रहने वाले, अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सर्व आत्माओं को शान्ति और शक्ति का सहयोग देने वाले निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी अति स्नेही, अपने हर कर्म द्वारा सदा गुणदान करने वाली, पूरे ब्राह्मण परिवार को स्नेह और शक्ति की पालना देने वाली, मीठी दादी जानकी जी एवररेडी का पाठ पढ़ाते हुए, एकनामी और एकॉनामी का अवतार बन एडवांस पार्टी में सेवा के लिए चली गईं। वह सर्व दृश्य तो आप सभी ने देखे सुने। यह भी ड्रामा की वन्दरफुल भावी अपना अनोखा पाठ पढ़ाकर गईं।

अभी वर्तमान में हम सबको प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा से साकार रूप में मिलाने वाली, सदा एकाग्रचित्त, दिव्य बुद्धि की वरदानि, सभी के दिलों को जीतने वाली दादी हृदयमोहिनी, जिन्हें बाबा प्यार से गुलजार बच्ची कहते, वह मुख्य प्रशासिका के रूप में अपनी सूक्ष्म शक्तिशाली सकाश द्वारा हम सबको आगे बढ़ाती रहेंगी। इन सभी बड़ी दादियों ने साकार बाबा के कदम पर कदम रखते हुए समय प्रति समय पूरे ब्राह्मण परिवार को अनेकानेक शिक्षाओं से सजाया है। उन्हीं शिक्षाओं के आधार पर आगे भी देश विदेश के नये पुराने सभी भाई बहिनों को मधुबन से ज्ञान-योग की पालना मिलती रहेगी।

वर्तमान समय संसार की विकट परिस्थितियों में सभी बच्चे परमात्म छत्रछाया के नीचे सुरक्षित हैं और अभी सबको अपनी ऊंचे से ऊंची स्थिति बनाने, एकान्त और एकाग्रता का अभ्यास करने का यह सुन्दर अवसर मिला है। अब हमें आलस्य, अलबेलेपन और बहानेबाजी को छोड़ मीठे बाबा की हर श्रीमत का पालन करते हुए अपनी वाइसलेस स्थिति बनानी है। बाबा और समय अब यही इशारा दे रहा है कि इस अन्तिम समय की अन्तिम घड़ियों को सम्मुख देखते हुए अपनी अन्तिम स्थिति पर पूरा-पूरा ध्यान दो। इसके लिए बाबा की चार बातें ध्यान पर आती हैं, आप सब अपने-अपने स्थानों पर रहते हुए इनका विशेष अभ्यास करना जी।

- 1) बाबा कहते बच्चे, अन्तर्मुखी बन अन्दर ही अन्दर स्वयं से बातें करो। मैं आत्मा जो हूँ, जैसी हूँ, उसे अपने दिव्य नेत्र से देखो, जरा भी कोई विकारों का दाग हो, तो उसे ज्वालारूप योग द्वारा समाप्त करो।
- 2) कार्य व्यवहार में आते, लौकिक अलौकिक परिवार के साथ रहते, हर एक पर अपने अलौकिक जीवन की छाप डाल दो। आपके चलन और चेहरे द्वारा साधारणता वा लौकिकता की झलक दिखाई न दे। आपकी जीवन ऐसा दर्पण बन जाये, जो ऊंचे ते ऊंचे ज्ञान और ज्ञान दाता को सभी सहज पहचान लें।
- 3) एक बाबा को सच्चा साथी बनाकर उनसे ही दिल की लेन-देन करते रहो। एक बल एक भरोसा, एक बाबा दूसरा न कोई, ऐसी पिताव्रता स्थिति में रहकर ड्रामा के हर दृश्य को साक्षी दृष्टा की सीट पर बैठकर देखो और सदा प्रसन्नचित्त स्थिति का अनुभव करते रहो।
- 4) बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण कर, सदा उपराम रह अपनी इच्छा मात्रम् अविद्या की अनासक्त स्थिति बनाओ। बाबा कहते बच्चे जब तक अन्दर से बेहद का वैराग्य नहीं आयेगा तब तक सम्पूर्ण परिवर्तन सम्भव नहीं है।

तो ऐसी गुप्त चेकिंग करते हुए, स्व-चित्तन के साथ शुभचित्तक बन विश्व कल्याण की सेवा करते आगे बढ़ते चलो।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



“सहनशीलता का गुण धारण कर बुरे को अच्छे में बदल दो”

- 1) बापदादा सभी को आगे बढ़ने की युक्ति बताते हैं कि बच्चे - सहनशीलता के गुण को अपना लो। जितना सहनशील बनेंगे, सत्यता की शक्ति होगी, उतना सहज अपना राज्य सतयुग ला सकेंगे। स्थूल कार्य वा अलौकिक सेवा के कार्य में सहज सफलता मिलती रहेगी।
- 2) पुरुषार्थी जीवन में चलते-चलते कई परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है तो व्यक्तियों द्वारा सहन भी करना पड़ता है लेकिन यह सहन करना ही उन्नति का रास्ता है। परिस्थिति का सामना करेंगे तो परिस्थिति स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी।
- 3) छोटी बात को बड़ी बनाना या बड़ी को छोटी बनाना, परेशान होना वा अपने अधिकारीपन की शान में रहना - यह सब अपनी स्थिति पर है। निश्चय बुद्धि बच्चे सहनशीलता के गुण को धारण कर बुरे को भी अच्छे में बदल देते हैं।
- 4) याद रखो कि अभी यह समय हर एक के सब हिसाब-किताब चुक्तु होने का है इसलिए ड्रामानुसार प्रैक्टिकल पेपर होने ही हैं। कई बातें अच्छे रूप में सामने आयेंगी तो कई बार अच्छा रूप होते भी बाहर का पर्दा नुकसान का दिखाई देगा, ऐसे समय पर थोड़ा धैर्यवत होकर, सहनशील स्थिति से अन्तर्मुखी होकर देखो तो बाहर के पर्दे के अन्दर जो कल्याण छिपा हुआ है, वह दिखाई देगा।
- 5) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिलपसन्द स्वभाव-संस्कार वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाले। दिलपसन्द अर्थात् बोल, कर्म और वृत्ति से सबको हल्केपन की अनुभूति कराने वाले। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से, सहनशीलता के गुण की धारणा से उन्हों को भी पहचान देकर परिवर्तन करो।
- 6) आप स्नेह के सागर बाप के बच्चे मास्टर स्नेह के सागर हो इसलिए यदि कोई अपने स्वभाव के वश क्रोध भी करता है तो आप उसे स्नेह दो। ऐसे नहीं उसने 10 बार क्रोध किया और आपने एक बार जवाब दे दिया। नहीं। चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध

- करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। सहनशील बन उसे भी समा लेंगे। अगर एक झूठ बोलता है, दूसरा क्रोध करता है - तो यह कोई बहादुरी नहीं है। आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव न आये तब कहेंगे सहनशील। यदि थोड़ा भी जोश आ गया तो उसको सहनशील नहीं कहेंगे।
- 7) सहन करने के पीछे शक्ति है। सहन करना अर्थात् शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप में दिखाना। सहन किया तो किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया, दूसरे के लिये नहीं सहन किया, बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा मानने की दुआयें जरूर मिलेंगी।
 - 8) कई बच्चे बातों को सामने देखते हैं और सोचते हैं कि हमने तो बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिए। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआयें क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो इसलिए मजबूरी से सहन नहीं करो, खुशी से सहन करो, इसमें ही फायदा है।
 - 9) कोई कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन आपका चेहरा ऐसी प्रसन्नता से भरपूर हो जो आपके वायब्रेशन की छाया में वह भी शीतल हो जाये, इसके लिए दूसरों की कमजोरी, देखते-सुनते उसके प्रभाव में नहीं आओ। उनका वर्णन भी नहीं करो। सुनो, सहन करो और समा लो।
 - 10) जब स्व के परिवर्तन का वा सहन करने का समय आता है तब कई कहते हैं कि क्या 'मुझे ही मरना है', 'मुझे ही बदलना है', 'मुझे ही सहन करना है' लेकिन जैसे लोग कहते हैं कि 'मरा और स्वर्ग गया' उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है।
 - 11) कई बच्चे कहते हैं "मैं ग़लत हूँ ही नहीं, वो ग़लत है", इसलिए ग़लत वाले को बदलना चाहिए। लेकिन इसमें दोनों को बदलना पड़े। 'बदलने' शब्द को आध्यात्मिक

भाषा में 'बदलना' नहीं लेकिन 'आगे बढ़ना' कहा जाता है।

- 12) कोई कैसी भी आत्मा हो, गाली देने वाली भी हो, निन्दा करने वाली हो लेकिन अपनी शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा, स्थिति द्वारा ऐसी आत्मा को भी गुण दान या सहनशीलता की शक्ति का वरदान दो। क्रोधी आत्मा परवश है इसलिए रहम के शीतल जल द्वारा उसे भी शीतल बनाओ।
- 13) अमृतवेले से लेकर रात तक यही लक्ष्य रखो कि दुआयें देनी हैं, दुआयें लेनी हैं। और कुछ भी नहीं करो लेकिन दुआएं दो और दुआएं लो। कोई आपको दुःख भी दे तो भी आपको दुआयें देनी हैं, इससे सहनशीलता का गुण स्वतः आ जायेगा।
- 14) कई बच्चे बॉडी कान्सेस के कारण बार-बार कहेंगे 'मैं' यह समझता हूँ, 'मैंने' जो कहा वही ठीक है, 'मैंने' जो सोचा वही ठीक है—यह रॉयल रूप का मैं-पन प्रतिज्ञा को

कमजोर कर देता है। और कमजोर आत्मा कहती है मैं इतना सहन नहीं कर सकता; अपने को इतना एकदम निर्माण कर दूँ, इतना नहीं कर सकता; इतनी समस्यायें पार नहीं कर सकता! इसलिए पहले इस "मैं" "मैं" की बलि चढ़ाओ तो सहनशीलता का गुण आ जायेगा।

- 15) स्वयं सहन कर दूसरे को शक्ति देना, कमजोरियों को समा लेना - यही सेवा भाव है। सहन करना, मरना नहीं है। कई सोचते हैं हम तो सहन कर-करके मर जायेंगे। क्या हमें ही मरना है! लेकिन यह मरना नहीं है, यह सबके दिलों में स्नेह से जीना है।
- 16) कोई कैसा भी विरोधी हो, रावण से भी तेज हो, एक बार नहीं 10 बार भी आपको सहन करना पड़े फिर भी सहनशक्ति का फल अविनाशी और मधुर होगा। वह भी एक दिन जरूर बदल जायेगा। सिर्फ यह भावना नहीं रखो कि मैंने इतना सहन किया, तो यह भी कुछ करे। अल्पकाल के फल की भावना नहीं रखो। रहम भाव रखो - यही है सेवाभाव।

“आदि सो अन्त का एक ही पाठ है - आत्म-अभिमानी बनो, इस पाठ को अब प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ”

(दादी गुल्जार)

हम सबको पहले दिन यही पाठ पढ़ाया गया कि आप एक आत्मा हैं, यह हमारा पहला पाठ है और लास्ट में भी यही आत्म-अभिमानी का ही पाठ रहेगा। रोज़ की मुरली में कितने बार यह महावाक्य आते हैं कि अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह बात हमने सुन तो ली कि हम आत्मा हैं लेकिन जो सुना वो दिल में समाया? अगर दिल में समा गया कि मैं आत्मा हूँ तो हमारे हर कर्म में, बोल में, दृष्टि में, वृत्ति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति, आत्मिक स्वरूप की स्मृति प्रैक्टिकल में होनी चाहिए। इसके लिए सिर्फ अटेन्शन देना है। व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करना है, मानो कोई समय आपके पास पेपर आता है, पेपर तो आयेंगे ही क्योंकि बाबा कहता है सीजन ही कलियुग की है। कलियुग का अर्थ ही है जहाँ कलह और क्लेष है। अगर हम बाबा को कहें कि बाबा

आप माया को अपने पास रख दो, आप इसे हमारे पास भेजते हो तो बहुत मेहनत लगती है, मिटाना पड़ता है। तो बाबा क्या कहेंगे? बाबा कहेंगे बच्चे, आपने ही तो चैलेंज की है कि हम विजयी रत्न बनेंगे... तो विजय किसके उपर प्राप्त करनी है! जब दुश्मन सामने आवे तब तो विजय प्राप्त करो या दुश्मन कमरे में बन्द हो और आप कहो हम तो विजयी हो गये। ऐसा तो होता ही नहीं है इसलिए माया सामना तो करेगी ना! जब वह सामने आये, तब आप विजय प्राप्त कर विजयी रत्न बनो। तो माया का काम है आना, हमारा काम है विजय प्राप्त करना। माया को देख करके और ही स्मृति आनी चाहिए कि हमें तो मायाजीत बनना ही है। फिर भी वो ऐसे छोड़ती नहीं है, भिन्न-भिन्न रूपों से आती ही रहती है, तो वो अपना काम नहीं छोड़ती है। चाहे उसे भगवान भी कह देवे कि आप मेरे बच्चों के पास नहीं जाओ, तो भी वो

कहेगी यह विजयी कैसे बनेंगे? इसीलिए कितना भी कुछ हो उससे और ही पाठ पढ़ो कि वो अपने काम को नहीं भूलती और हम मास्टर सर्वशक्तिवान अपने काम को भूल क्यों जाते हैं!

माया कशिश करती है, चुम्बक के रूप से आती है, लेकिन हमारे ऊपर असर नहीं कर सकती है क्योंकि हम सभी कहते हैं कि हमारे साथ बाबा कम्बाइन्ड है। तो आप सबके साथ शिवबाबा कम्बाइन्ड है ना! कम्बाइन्ड है तो वो तो एक सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता है। जब वह सर्वशक्तिवान हमारे साथ कम्बाइन्ड है फिर माया कैसे आ सकती है? एक बार किसी बच्चे ने बाबा को कहा, बाबा मेरे में और सबकुछ है लेकिन एक शक्ति हमारे में बहुत कम है, वही एक शक्ति जो हमारी कम है ना वही हमको बार-बार धोखा देती है। तो बाबा ने कहा कि अच्छा, तुम्हारे में मानो सहनशक्ति कम है, सामना करने की, निर्णय करने की... कोई भी एक शक्ति कम है, लेकिन आपके साथ कम्बाइन्ड कौन है? कम्बाइण्ड तो सर्वशक्तिवान है ना! उसमें तो कमी नहीं है, अगर मानो आपमें कमी है भी तो आपके साथ कम्बाइण्ड जो बाबा है, उसके सहयोग से वो शक्ति धारण नहीं कर सकते हो! तो बाबा ने कहा यही बच्चे गलती करते हैं कि जिस समय कोई कमजोरी आती है, उस समय कम्बाइण्ड सर्वशक्तिवान से शक्ति का सहयोग नहीं लेते हैं। बस, अपने को अकेला समझके क्या करूँ, कैसे करूँ... बहुत बड़ी परीक्षा है, बहुत सामना करना पड़ता है, बहुत मुश्किल है। इसी में ही क्यों और क्या में चले जाते हैं। लेकिन बाबा साथ है तो उसकी मदद होनी चाहिए ना। समय के ऊपर वो सहयोग न देवे ऐसा बाबा तो हमारा नहीं है। वो तो ऑफर करता है, आया ही हमारे लिये है। हरेक क्या समझते हैं! बाबा किसके लिये आये हैं? क्या सिर्फ बड़ी-बड़ी दादियों के लिये बाबा आया है? मेरा बाबा कहते हो ना सभी। यह थोड़ेही कहते हो कि दादियों का बाबा है। मेरा बाबा कहते हैं तो मेरे के ऊपर तो पूरा अधिकार होता है ना। तो जब मेरा बाबा है और कम्बाइण्ड है तो कम्बाइण्ड से सहयोग क्यों नहीं लेते हो? तो बाबा ने कहा बच्चों को जिस समय मदद चाहिए ना, उस समय भूल जाते हैं। फिर कहते हैं यह ऐसे करते थे ना, ऐसा होता था तो बहुत अच्छा था। क्या करें, हो गया। मदद लेने के बजाए पश्चाताप करने लगते हैं।

अगर हम समय पर बाबा से मदद नहीं लेते हैं, कम्बाइण्ड का फायदा नहीं उठाते हैं तो धोखा खा लेते हैं और धोखा खाने से प्राप्ति के बजाए पश्चाताप करना पड़ता है। हाय यह होता तो अच्छा! यह होता तो अच्छा... तीर कमान से निकल गया वो

वापस नहीं आता है। समय तो चला जाता है ना। हार तो खा ली ना, आपके रजिस्टर में काला धब्बा तो लग ही गया, इसीलिए बाबा कहते हैं अगर आप कहते हो बाबा कम्बाइण्ड है तो फायदा उठाओ क्योंकि बाबा कहता है मैं तुम्हारा बोझ उठाने आया हूँ फिर भी बोझ अपने सिर पर क्यों उठा लेते हो, जबकि मैं मदद देने के लिये आया हूँ, कहता हूँ ट्रस्टी बनो। ट्रस्टी माना तेरा, गृहस्थी माना मेरा। तो मेरा मेरा जो है, वो है बोझ, और तेरा तेरा कहा तो बोझ खत्म हुआ। बाबा को दे दिया बोझ। बाबा तो बार-बार कहता है बच्चे सारा बोझ मेरे को दे दो, आप ट्रस्टी बन जाओ क्योंकि मेरे में ही ममता जाती है। कोई पड़ोसी है, कोई भाई है, उसका हजार रूपया समझो खो गया तो आपको इतना शॉक नहीं आयेगा और आपके पर्स में से एक सौ रूपया भी गया तो कितने बारी याद आयेगा। एक-दो मास के बाद भी वो याद आयेगा क्योंकि वो मेरा था और दूसरे का हजार रूपया भी चला जायेगा ना, एक मानवता के रीति से भले आपको आयेगा बिचारे का जाना नहीं चाहिए लेकिन बुद्धियोग बार-बार नहीं जायेगा इसीलिये बाबा कहता है कि मेरे मेरे को छोड़ दो। यह मेरे मेरे का जो बोझ है, उसने आपको कमजोर करके रखा है। और बोझ वाला जो होगा वो धीरे चलेगा, हल्का जो होगा वो आपेही उड़ेगा। जैसे तूफान आता है तो पहले क्या उड़ेगा कागज़ क्यों? क्योंकि हल्का है। लेकिन बोझ देने की विधि क्या है? तेरा। बस, मेरा छोड़के तेरा। जब मेरा मेरा कहके बोझ अपने ऊपर रख देते हो तब कहते हो बाबा छुड़ाओ ना। लेकिन रखा क्यों? किसने कहा बोझ रखो? रख लेते हैं फिर चिल्लाते हैं। बचाओ बाबा... तुमको कहा किसने यह करो। इसीलिए मेरा को तेरा करो। भक्ति में रोज़ कहते थे तेरा तुझको अर्पण, मेरा कुछ नहीं लागे लेकिन लागे सुई भी, मोह तो सुई में भी जाता। और बाबा तो श्रीमत देते हैं मेरा मेरा छोड़ो फिर भी अगर मेरा मेरा में फसंगे तो बाबा फिर क्या करेगा?

बाबा कहते हैं अमृतवेले से लेके अपने को बीच-बीच में चेक करो। हम समझते हैं हमने अमृतवेले बहुत पाँवरफुल योग कर लिया और मुरली भी सुन ली। तो यह जैसे कि हमारा हो गया। चलो, यहाँ तक तो ठीक है फिर जब कामकाज में जाते हैं तो कामकाज करते भूल जाते हैं। लेकिन हम कर्मयोगी भी हैं, इसलिये हम हमेशा कहते हैं कि कैसे भी करके चाय, पानी और भोजन आदि ऐसे आवश्यक कर्म जो हैं वो करते समय भी अगर याद करें तो भी श्रीमत का पालन करते करते यह आदत पड़ जायेगी। मानो कि यह अभ्यास पक्का हो गया है मैं आत्मा डायरेक्टर हूँ तो मेरे डायरेक्शन पर सब चलना चाहिए, ऐसे

कर्म कराने वाली मैं आत्मा हूँ, यह न भूले।

ब्रह्माबाबा के भक्तिमार्ग की एक बहुत पुरानी सन् 1932 की डायरी मिली थी, जिसमें अपने कर्मन्द्रियों के दरबार की सारी लिखत मिली थी। तो देखो, कितनी मेहनत की है बाबा ने। तो हमको भी अपनी चेकिंग जरूर करनी चाहिए। और ऐसे नहीं अमृतवेले कर लिया, चलो योग थोड़ा लगा लिया। लेकिन बीच-बीच में चेकिंग किया? सारी कारोबार ठीक चल रही है? क्योंकि 63 जन्म हमारी उल्टी राजधानी हो गई थी, उसको सुल्टा करने में थोड़ा टाइम तो लगेगा ही इसलिये रोज अपनी चेकिंग करो। सिर्फ अमृतवेले चेकिंग कर ली, फिर रात्रि में सोने के टाइम कर ली, बस, खुश हो गये... हम भी हो गये ब्रह्माकुमार। लेकिन नहीं, हमको बार-बार अपनी चेकिंग करनी है। कम-से-कम दिन में पाँच-छः बारी तो करना ही चाहिए।

चेक भी सिर्फ ऐसे नहीं करना कि आज तो थोड़ा 50 प्रतिशत रहा, आज 40 प्रतिशत रहा, फिर यह सोचो कि अभी तो होता ही नहीं है। शायद भाग्य में ही नहीं है, कितना कोशिश करते हैं फिर भी हो ही नहीं रहा है, इसलिये इस तरह से सिर्फ चेक नहीं करना लेकिन चेक के साथ चेंज करना, परिवर्तन करना यानि जो कमी हो उसको उसी समय बदली करो। सिर्फ चेक करने से कमी पेशी देख करके दिलशिकस्त हो जाते हैं फिर दोष अपने को नहीं देते हैं। कहेंगे मेरा ड्रामा में पार्ट ही नहीं है, क्या करें, तकदीर ही मेरी नहीं है। अभी दोष हुआ तकदीर और ड्रामा पर, है अपनी कमजोरी, इसलिये सिर्फ चेक नहीं करना लेकिन चेक के साथ चेंज करना और आप में कोई शक्ति की कमी है तो

कम्बाइण्ड बाबा के मदद से उसको चेक करके चेन्ज करना, तभी तो आपका नम्बर आगे आयेगा क्योंकि हमको विजय जरूर प्राप्त करनी है। विन करेंगे तो वन नम्बर में आयेगे। विन माना विजय। विजयी नहीं बनेंगे तो वन नम्बर कैसे आयेगे? तो कभी भी कोई भी बात सोचो ना, उसमें दृढ़ संकल्प करो। ऐसे नहीं सोचेंगे, देखेंगे, करेंगे... गे गे नहीं करो। अगर करना ही है तो अपनी दिनचर्या का टाइम टेबल बना लो और दृढ़ता से उसे करते चलो तो विजयी बनते आगे नम्बर लेते जायेंगे। कोई भी काम करो स्थूल सूक्ष्म... लेकिन दृढ़ता की चाबी अगर आपके पास है तो सफलता आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है। दृढ़ता और सफलता साथ-साथ है। जिन्होंने दृढ़ संकल्प किया है वो आज बहुत अच्छे अपने योगयुक्त अवस्था में, श्रीमत पर चलने वाले आगे जा रहे हैं। और जो गे गे लगाते हैं ना, वो अभी तक भी भिन्न-भिन्न रूपों से गे गे ही कर रहे हैं इसलिए जो करना है वो तुरत दान महापुण्य क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं है, इसके लिये बाबा ने कहा है अचानक का पाठ याद रखो। अभी देखो बच्चे भी बैठे हैं, बाबा भी बैठे हैं और दस मिनट के बाद विनाश होना है, तो भी बाबा कुछ नहीं बतायेगा क्योंकि अचानक होना है। इसके लिये अचानक शब्द को ध्यान में रखते हुए एवररेडी बनो क्योंकि कभी भी किसी का कुछ भी हो सकता है इसलिये हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो और समय का लाभ लो, वायुमण्डल का लाभ उठाओ। तो अटेन्शन प्लीज। अच्छा।

“दादी जानकी जी द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें”

- 1) मधुबन में आना माना बाबा से मिलना, बेहद के परिवार से मिलना, बेहद के खजाने को पाना।
- 2) सीखने की भावना हमें सदा ही सुखी बनाती है।
- 3) सेवा करते हो तो पैगाम भी दो और प्रेरणा भी दो तब रिजल्ट मिलेगी।
- 4) अपने को आत्मा समझ, बाप को याद कर फिर किसी को समझाओ तो असर होगा।
- 5) अथक बनना मेरा धर्म है। यदि थकूंगी तो मेरी आवाज में मिठास और शीतलता नहीं होगी और ताकत भी नहीं होगी।
- 6) पुरुषार्थ और मेहनत से भी जो नहीं मिलता है वह वायुमण्डल

- से मिलता है। मधुबन का वायुमण्डल ऐसा है जहाँ पवित्रता, प्रेम और शान्ति की गहन अनुभूति होती है।
- 7) करन-करावनहार करा रहा है - यह ध्यान पर हो तो अपमान, अभिमान नहीं होगा।
- 8) प्यार ऐसी चीज़ है जो सदा मुस्कुराना सिखाता है और मुस्कराओ तो मुश्किलात खत्म हो जायेगी।
- 9) यदि मुस्कुराना ही नहीं जानते तो व्हाट इज़ दी परपज़ ऑफ लाईफ।
- 10) कोई भी बात में मुरझाना माना फेल होना।
- 11) यह स्कूल ऐसा है जो सवरे मुरली लेशन पढ़ो वा सुनो और दोपहर में पेपर आयेगा।

- 12) बाबा ने हमें जो सिखाया है वह हमारी सूरत पर हो, लोग उसे देखकर सीखेंगे।
- 13) औरों को क्लास तो कराते हो, परन्तु दिन रात अपने पर भी ध्यान रखना है।
- 14) ऊंची पढ़ाई, पढ़ाने वाला ऊंचा भगवान और हम परेशान तो गई इज्जत।
- 15) मैं का अभिमान टच न करे, कोई भी मेरापन फंसाये नहीं - वह है भाग्यशाली।
- 16) निश्चय का बल है तो नशा चढ़ता है और याद की शक्ति बढ़ती है।
- 17) योग बाबा के साथ है, वही बल काम कर रहा है और यदि अपना बल खर्च करो तो थक जाओगे, इसमें इकॉनामी करो। बाप की याद है तो सेवा अपने आप होती रहती है।
- 18) लक्ष्य हो कि टीचर बनू परन्तु आर्डनरी नहीं, आदर्श टीचर बनू। अनेकों को प्रेरणा देने वाली बनू। मुझे देख कोई कुछ सीख सके, ऐसी बनू।
- 19) मेरा जीवन देख दूसरे को पता पड़े कि संस्था का उद्देश्य यह है।
- 20) टीचर को देखकर ही तो सेन्टर खुलते हैं। सदा लक्ष्य दाता और लक्ष्य सामने हो वही आदर्श जीवन है।
- 21) वह भी एक आदर्श जीवन है जहाँ कुटिया ऐसी हो - जहाँ खटिया नहीं, न दरी, न घड़ी। लाओ कीड़े को और भूँ भूँ करो, छोड़ो नहीं, उन्हें चेंज करो - आप समान बना ही दो, यही जीवन है।
- 22) जो है उसे सफल करने का सदा ही ध्यान रहे। सफल टीचर वही है जिसमें हर चीज़ सफल करने की अक्ल हो।
- 23) हमने सच्चाई को जाना है उसे अपने जीवन में धारण किया है। जो सच्चा है वह ईमानदार होगा। सागर के किनारे तो कौड़िया भी मिलती हैं। परन्तु गहराई में जाकर रत्न निकाल लायें, यही जीवन है।
- 24) अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा होगा, बाबा खुश होगा। सच्चे रहेंगे तो बाबा मदद करेगा।
- 25) न मैं किसी से नाराज़ होऊँ और न मेरे से कोई नाराज़ हो। हर हालत में राज़ी रहना है। हर्षित, एकाग्र, प्रसन्नचित रहना है। सदा खुश रहो। यह तब होगा जब बाबा से खजाने इकट्ठा करते रहेंगे।
- 26) शरीर में फँसे रहने की, फालतू सोचने की, दूसरों को देखने की जो आदत पड़ी हुई है - इससे ऊपर उठना है। पुरुषार्थ में बहाना कभी नहीं बनाना है।
- 27) जो बाबा ने सुनाया उसे सोचो, जो बाबा ने मुरली में मेरे लिए कहा है, वह सोचो।
- 28) अच्छा पुरुषार्थ करने से बाबा की दुआ मिलेगी। लायक बनने से बाबा की दुआ मिलेगी, जिसका पुरुषार्थ सहज है उसे कोई बात मुश्किल नहीं।
- 29) फालतू बातें सोचा, परन्तु फायदा क्या हुआ - रिजल्ट क्या निकली? जागो तो बेफिक्र होकर और सोओ तो बेफिक्र होकर।
- 30) जो पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ता है, उसे फखुर (नशा) रहता है।
- 31) अशान्त होना आता है, शान्ति के सागर की सन्तान को शान्ति में रहना नहीं आता! दुःखी होना आता है परन्तु खुशी में रहना नहीं आता, कमाल हुई ना!

“साधारण और व्यर्थ को समाप्त कर संकल्प की क्वालिटी को समर्थ और श्रेष्ठ बनाना यही हमारी शान है” (दादी जानकी)

याद में मिलन, मिलन में याद। याद में मिलन की भासना आती है फिर आपस में मिलकर बाबा की याद में बैठते हैं तो ये मिलन भी अलौकिक न्यारा और प्यारा है। इसकी आकर्षण हमको तो बहुत खींचती है। इस वायमुण्डल के वायब्रेशन विश्व में पहुंचते हैं। वर्तमान समय हम सब तो बाबा की समझानी, सावधानी अच्छी तरह से जानते हैं। बाबा ने शिक्षायें ऐसे नहीं दी हैं। समझा-समझा के दी हैं। सावधानी भी दी है कि अब करेंगे

तो सदा के लिए हो जायेगा। थोड़ा भी अलबेलेपन के कारण नहीं करेंगे तो हमारे लिए कोई नहीं करेगा। जिनके निमित्त बने हैं वो भी नहीं करेंगे। कान्ट्रेक्ट जो बाबा ने उठाया है कि हिम्मत बच्चे मददे बाबा। बाबा की मदद का सबको भाग्य कितना ऊंचा है। तो मैं इसी भावना से अपने हमजिन्स साथियों से रूहरिहान करना चाहती हूँ।

भगवान से बात करने के लिए हिम्मत चाहिए। इसके लिए

अपने को भी वही रूप धारण करना पड़ेगा। भगवान कौन है? वह विदेही है, ऊपर रहता है। उनसे कनेक्शन जोड़ेंगे तभी तो उनसे बात करेंगे। उनसे बात करने का मतलब हमको शान्ति, शक्ति और प्यार चाहिए। भगवान स्वयं मेरे को कहता है कि तुम शान्त रहो तो मैं तेरे से बात करूँ। परन्तु हम शान्त कैसे रहें? तो कहता है तू सब सम्बन्धों को दुनिया की बातों को भूल शान्त हो जा। अगर हमारी बुद्धि इधर उधर जाती है तो भगवान से कनेक्शन जुटेगा ही नहीं। अगर हमारे में अभिमान होगा, अटैचमेन्ट होगी तो वह भगवान से दूर कर देगी।

अभी हम आपस में इकट्ठे हुए हैं भगवान के बच्चे हैं, स्टूडेंट हैं। भगवान बाप के डायरेक्शन अनुसार ही हमारी लाइफ है। लोगों को हमारी लाइफ का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिए। स्वमान में रहने के लिए मैंने अपने आपको ऐसा खड़ा कर दिया है। आजकल स्वमान में रहने के लिए, स्थिति को अचल-अडोल बनाने के लिए, हर सेकेण्ड-सेकेण्ड ड्रामा की नॉलेज मदद कर रही है। सब चिन्तन से फ्री, चिन्ता से मुक्त। चिन्ता तो कोई होती नहीं है। खास हम बच्चों को कोई चिन्ता नहीं रह सकती। दुःख का नामनिशान भी हमारे अन्दर न रहे क्योंकि हम चैलेन्ज करते हैं। बाबा कहते हैं सन्देश दो, तो सन्देश भले भूल भी जाये, पर चेहरे जो शान्ति और प्यार के देखते हैं, वह भूल नहीं सकते। हम लोगों को कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल बाप को याद करो। तो हम सब बातों को समेट करके सदा एक की स्मृति में रहते हैं! हमारी देह छोड़ने की अन्तिम स्थिति कैसी होगी! कोई ऐसी घड़ी न हो जो स्मृति भूली हुई हो।

बाबा ने हम सबको यही शिक्षा दी है कि अतीन्द्रिय सुख में रहने के लिए आवाज में कम आओ। लेन-देन की बात अलग है। याद हमारी नेचुरल हो, जैसे भगवान और हम। जो बाबा कहता है सम्पन्नता से समानता आयेगी। जब तक कोई कमी होगी तो समानता दूर हो गई।

आत्म-अभिमानि स्थिति ऐसे नहीं बनती है, जब तक आत्मा में परमात्मा की याद का बल नहीं भरा है क्योंकि देह-अभिमान ने अच्छा पकड़ रखा है। मोटे विकार तो सबके गये। परन्तु व्यर्थ और साधारण संकल्प भी कमजोर बनाते हैं। जरा सा भी साधारण व्यर्थ का दरवाजा खोल देते हैं। तो अपने ऊपर पूरा अटेंशन

दो। पुरुषार्थ में, सेवा का आधार, चाहे स्व का आधार समर्थ संकल्प की शक्ति ही है। समर्थ संकल्प की जो क्वालिटी है वो रॉयल्टी है। अपने संकल्प की क्वालिटी एक बारी अच्छी बना ली तो शान है।

मीठे बाबा के बोल - प्योरिटी की पर्सनैलिटी, प्रासपर्टी तुम्हारे पास है, इससे हमारे में ताकत आती है। प्युरिटी में आनेस्टी भी आती है, सत्यता, ईमानदारी के हम मालिक हैं। इसमें ऐसा-वैसा ख्याल भी आता है तो वो भी शान नहीं है। मैं और कोई ख्याल उत्पन्न करूँ, यह मेरा शान नहीं है। हमारे संकल्प की क्वालिटी इतनी ऊंची हो जैसे हमारा बाप। जैसे बाप को संकल्प आया नयी दुनिया बनाने का। उसमें भी हरेक को अनुभव है कि बाबा ने मुझे कैसे खींचा। फिर जो पालना और पढ़ाई मिली है, हरेक का अनुभव अपना है। सबको ज्ञान सुना तो लेते हैं पर प्रैक्टिकल अमल करने में हमारे अनुभव की शक्ति चाहिए, इसमें मेहनत नहीं है, पर स्नेह है।

पुरुषार्थ भी सहज है, सेवा भी सहज है, आपस में सम्बन्ध में आना भी सहज है। हम सबने एक दो की विशेषता को जाना है, तो स्नेह है, रिगार्ड है। स्नेह सच्चा है तो औरों को मदद मिलती है। थोड़े दिन भी साथ रहने से खुश हो जाते हैं। हमारी बुद्धि की स्थिरता ऐसी हो जाये, जो हमारी स्थिरता पर भी अपना शान है। जो नेचर नेचुरल नेचर बन जाये। दिन रात अगर यही तात होगी तो मन में भी वही बात होगी। मुख पर भी वही बात होगी। कोई और बात है ही नहीं जो ख्याल चले। साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों ही दिल में हैं, निराकारी स्थिति में रहें उसके बिगर काम नहीं चलेगा, वाइसलेस नहीं बनेंगे, इगोलेस नहीं बनेंगे। साकार में जो बाबा ने सिखाया है, अगर वो ध्यान पर नहीं होगा तो निराकारी स्थिति नहीं बनेगी। बाबा साकार से अव्यक्त क्यों हुआ? हमको अव्यक्त बनाने के लिए। बाबा कहता मैं बच्चों का वेलकम करने के लिए बैठा हूँ। तो साकार शरीर में होते हुए बाबा जैसा अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप रहे। मम्मा बाबा ने कभी इस बात को हल्का नहीं रखा। तो हमारी भी याद ऐसी हो जो यादगार बन जाये। दुनिया भर में जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उनके यादगार हैं। दुनिया वाले भी मानते हैं। हम भी प्रैक्टिकल ऐसे कर्म करते चलें। ऐसा भाग्य हम सब भी अपना बनायें ये मेरी भावना है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“बेहद सेवाओं में रहते बाप समान उपराम और एवररेडी रहो”

हम सबकी तपस्या भट्टी का लक्ष्य है कि हमें बाप समान बनना है। जैसे हमारा बाबा ज्ञान का सागर, प्यार का सागर, गुणों का भण्डार और साथ-साथ सर्व का कल्याणकारी, हितकारी है, ऐसे हम सब भी बन जायें। हम तो यह देखती कि बाबा हरेक बच्चे को कितना प्यार करता है। हरेक प्यार के अनुभवी होंगे कि बस मुझे ही बाबा इतना प्यार करता है। मुझे ही बाबा खजानों से इतना भरपूर करता है। मुझे ही अपने समान बनने का वरदान देता है। मेरा बाबा मेरे को इतनी दुआओं से भरपूर करता है। तो ऐसा ऊंचा लक्ष्य रखकर हर एक पुरुषार्थ करे कि मुझे बाप समान कर्माती बनना है। अगर कल भी मेरा शरीर छूट जाये तो यह अनुभव रहे कि बस मुझे तो प्यारा बाबा अपने साथ वतन में उड़ाके ले जा रहा है। बाबा की दृष्टि ऐसी है जो वह अपनी दृष्टि से ही हमें सम्पन्न बना देता है। तो हर एक अपने आपसे पूछे कि हम ऐसे एवररेडी हैं? अगर कल भी बाबा हमें अपने वतन में बुला ले तो हम सहज उड़ सकेंगे! यह पश्चाताप न हो कि बाबा अभी तो बाकी यह यह करना है। बाबा ने हम सबको वरदान दिया है मोहजीत। मुझे तो यही गीत बार-बार बुद्धि में आता है कि कोई काम नहीं, कोई क्रोध नहीं, कोई लोभ नहीं, कोई मोह नहीं, कोई अभिमान नहीं, कोई व्यर्थ चिन्तन नहीं, बस बाबा-बाबा

और घर याद आये।

तो मेरी आप सबके प्रति यही प्यार भी है और भावना भी है कि सर्व के कल्याण के निमित्त ये श्वास, संकल्प, समय सब सफल हो। दादी का ये जरूर चिन्तन चलता कि बाबा आज अगर हमें यहाँ से उड़ा लेवे, तो बाबा के साथ, बाबा के घर चले जायें। ऐसी अपनी कर्मातीत स्थिति रहनी चाहिए जो यह नहीं हो कि कोई भी तन का आकर्षण है, सेवा या साथियों की आकर्षण है। जैसे बाबा का हम बच्चों से अति प्यार रहा, लेकिन प्यार होते भी बाबा इतना ही निर्लेप, निर्मोही रहा, ऐसे हम सबको भी बाबा के समान बनना है।

बेहद सेवाओं में रहते भी हमें बाबा समान उपराम रहना है। किसी बात में बुद्धियोग कहाँ न जाये। जैसे बाबा आर्डर करता था - बच्ची यहाँ जाओ, यहाँ जाओ। बाबा को कोई बात का अगर हम जवाब भी देती थी तो बाबा नहीं मानता था। बाबा ने कहा और हाँ जी। बाबा ने दादी को हर कदम में ऐसे एवररेडी रखा। तो हम समझती आप सभी भी बहुत-बहुत प्यार से सभी सेवायें करते हो, फिर भी हरेक अपना चार्ट जरूर देखो कि सबकुछ करते हम कहाँ तक एवररेडी और उपराम रहते हैं? अच्छा - ओम् शान्ति।

विशेष अटेंशन

वर्तमान समय चारों ओर देश विदेश के सभी राजयोगी बी.के. भाई बहिनें, ज्ञान और योग की बहुत अच्छी तपस्या कर रहे हैं, जबकि पूरे विश्व में इस कोरोना वायरस के कारण महामारी का दौर चल रहा है, लगभग सभी देश लाक डाउन हैं। अन्य सभी सेवायें बन्द हैं। बाबा के सभी बच्चे, विशेष परमात्म याद की छत्रछाया के नीचे स्वस्थ और सुरक्षित रह पूरे विश्व की आत्माओं को शान्ति और शक्ति की सकाश देने व विशेष अपनी निर्भयता की स्थिति द्वारा सबको भयमुक्त बनाने की सेवा कर रहे हैं। इसके लिए मधुबन बेहद घर से ऑन लाइन द्वारा आप सबको अनुभवी भाई बहिनों की बहुत अच्छी-अच्छी प्रेरणायें (क्लासेज) मिलती रहती हैं। रोज़ शाम को 7.00 से 7.30 बजे तक विश्व शान्ति निमित्त योग, उसके पश्चात किसी न किसी बड़े भाई बहिनों की अनुभवयुक्त क्लासेज चलती हैं, जो आप सब अपने स्थानों पर देख व सुन रहे होंगे। ऐसी विकट परिस्थिति के समय हम सबको अपनी शुभ वृत्तियों द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की विशेष सेवा करनी है। इसके साथ-साथ बाबा यह भी इशारा करते हैं बच्चे, जितना आप आगे बढ़ेंगे उतना माया भी अपने नये-नये बहुरूपों से सामना करेगी। ऐसे समय पर कुछ लोग अपनी मनमत के आधार पर मनगढ़ंत बातों का प्रभाव डालने का प्रयास करते हैं, कोई कहते हैं अभी बापदादा का पार्ट हमारे पास चलता है, कोई फिर ज्ञान की ही बातों को तोड़-मरोड़ कर ऐसे प्रस्तुत करते हैं जो कुछेक नये-नये बाबा के बच्चे उसमें भ्रमित हो जाते हैं। बाबा कहते बच्चे, यह समय दूसरी बातों पर ध्यान देने का नहीं है, मधुबन से जो आप सबको ज्ञान योग की अलौकिक पालना मिल रही है, उस पर ही ध्यान देना है। अन्य किसी भी बात में संगम का यह अमूल्य समय, संकल्प वा अपनी एनर्जी व्यर्थ नहीं करनी है, इसका विशेष ध्यान रख अपनी सम्पन्नता और सम्पूर्णता की मंजिल को समीप लाना है। ओम् शान्ति।